निज़ामाबाद (आजमगढ़) की पारंपरिक हस्तशिल्प कला : एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर

अनुराग सिंह*

anuragsingh7592@gmail.com

शोध सार

भारत एक विविधता से भरा देश है जहाँ की हस्तशिल्प कलाएँ न केवल कला की दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भी अत्यंत मूल्यवान हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित निज़ामाबाद तहसील, जो आज़मगढ़ जिले का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, वहाँ की ब्लैक पॉटरी (काली मिट्टी की पॉटरी) और अन्य हस्तशिल्प कलाएँ देश की सांस्कृतिक विरासत का जीवंत उदाहरण हैं। यह कला न केवल स्थानीय समाज के सामाजिक-आर्थिक जीवन का हिस्सा है, बल्कि भारत की पारंपरिक शिल्पगाथा की अमूल्य धरोहर भी है।निज़ामाबाद की काली मिट्टी से बनी हुई चमकदार काले रंग की पॉटरी (Black Pottery) भारत की अत्यंत प्राचीन और दुर्लभ हस्तशिल्प कलाओं में से एक है। ऐसा माना जाता है कि यह कला लगभग 500 वर्षों से अधिक पुरानी है। यह कारीगरी मुग़ल काल से जुड़ी हुई मानी जाती है और इसे हस्तशिल्प की अद्वितीय परंपरा के रूप में संरक्षित किया गया है।

बीज शब्द – विविधता, हस्तशिल्प कलाएं, सांस्कृतिक धरोहर, विरासत परंपरा ।

प्रस्तावना

भारतवर्ष अपनी विविध सांस्कृतिक परंपराओं, कलात्मक अभिव्यक्तियों और हस्तशिल्प की जीवंत विरासत के लिए विश्व पटल पर एक विशिष्ट स्थान रखता है। भारत के ग्रामीण अंचलों में सदियों से चली आ रही हस्तकलाएँ आज भी न केवल जीवित हैं, बल्कि अनेक सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं की रीढ़ बन चुकी हैं। इन्हीं विरासत स्वरूप कलाओं में एक अत्यंत विशिष्ट और दुर्लभ हस्तकला है – ब्लैक पॉटरी (काली मिट्टी की कला), जो उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ ज़िले की निज़ामाबाद तहसील में पाई जाती है। यह कला अपने अनोखे सौंदर्य, तकनीकी प्रक्रिया और पारंपरिक मूल्यों के कारण देश ही नहीं, विश्वभर में जानी जाती है।आजमगढ़ शहर का जिक्र जब होता है तब निजामाबाद की ब्लैक पॉटरी के बिना अधूरा रहता है। मुख्य शहर से करीब 15 किलोमीटर दूर निजामाबाद के ये काली मिट्टी के बने नक्काशीदार बर्तन न सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया में आजमगढ़ और निजामाबाद को पहचान दिला रहे हैं। बौद्धिक संपदा सूची (ज्योग्राफिकल इंडेक्स) में इन बर्तनों को भी दर्ज किया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी देश की लोककला को बढ़ावा देने के साथ ही

* **शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिए जाने वाले उपहारों की सूची में ब्लैक पॉटरी को शामिल किया है। देश के राजदूत हों या राजनेता, दूसरे देशों को उपहारों ब्लैक पॉटरी के बर्तनों को उपहार स्वरूप देने लगे हैं।

भारत की आत्मा उसकी संस्कृति, परंपराओं और लोक कलाओं में बसती है। देश की ग्रामीण और कुटीर शिल्प परंपराएँ केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि एक जीवन शैली, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक सहभागिता का प्रतीक हैं। ऐसी ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनोखी शिल्पकला है — ब्लैक पॉटरी (काली मिट्टी की पॉटरी), जो उत्तर प्रदेश राज्य के आज़मगढ़ ज़िले की निज़ामाबाद तहसील में पाई जाती है। यह हस्तशिल्प परंपरा अपने विशेष रंग, कलात्मक डिज़ाइन और निर्माण की विशिष्ट तकनीक के कारण भारत ही नहीं, विश्वभर में प्रशंसा प्राप्त कर चुकी है। ब्लैक पॉटरी, अपनी प्रकृति में न केवल सौंदर्यपरक है, बल्कि यह परंपरा, इतिहास, स्थानीय ज्ञान, और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से जुड़ी हुई जीवंत विरासत भी है। इसका निर्माण पूर्णतः हस्तनिर्मित होता है, जिसमें मिट्टी, आग, धुएँ और श्रमिक के हाथों की शक्ति से कला का जन्म होता है। इस कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि पॉटरी को पकाने के विशेष पारंपरिक ढंग से यह गहरे काले रंग में परिवर्तित हो जाती है और फिर उस पर चाँदी जैसी धातु की कीलों से डिज़ाइन की जाती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

निज़ामाबाद की ब्लैक पॉटरी का इतिहास 400 से 500 वर्षों पुराना माना जाता है। इसकी जड़ें मध्यकालीन भारत, विशेषकर मुग़ल शासनकाल से जुड़ी हुई हैं। कहा जाता है कि इस क्षेत्र के कुम्हारों ने इस कला को पारंपरिक रूप से विकसित किया था और मुग़ल दरबारों में भी इसकी माँग थी। इस काल में मिट्टी से बनी वस्तुएँ न केवल धार्मिक कार्यों में प्रयोग होती थीं, बल्कि वे शाही महलों में सजावट और जलपान के बर्तनों के रूप में प्रयुक्त होती थीं। उस समय की ताम्र और रजत इनले वर्क से प्रेरणा लेकर, कारीगरों ने मिट्टी पर चाँदी जैसी पॉलिश या डिज़ाइन करने की तकनीक विकसित की, जो आगे चलकर ब्लैक पॉटरी के रूप में प्रसिद्ध हुई।मुगल काल की सबसे खास कलाओं में काली मिट्टी के बर्तन बनाने की कला भी शामिल रही है। ये भी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है कि निजामाबाद के कुम्हारों ने 300 साल पुरानी ब्लैक पॉटरी की कला को आज तक जीवित रखा है। उन्होंने इसे ना सिर्फ कला के रूप में बल्कि रोजगार के क्षेत्र में भी आगे बढ़ाया है।

निज़ामाबाद का नाम इस कारीगरी के साथ इतनी गहराई से जुड़ गया कि यह क्षेत्र आज पूरे भारत में "ब्लैक पॉटरी का गढ़" कहलाता है। इसकी भौगोलिक विशिष्टता (GI Tag – 2015) ने इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान दिलाई। कलाकारों के मुताबिक, साल 2022 में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जापान के प्रधानमंत्री को इसी कला का एक कला बर्तन उपहार में दिया तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस कला की ख्याति, उपलब्धि और पहचान बढ़ी। इससे कारीगरों के लिए नए अवसर खुलने लगे । उत्तर प्रदेश सरकार माननीय योगी आदित्यनाथ ने एक जिला, एक उत्पाद योजना के तहत इस कला को पुनर्जीवित करने का प्रयास किये । स्थानीय स्तर पर शिल्प केंद्रों की स्थापना की गई, जहां कारीगरों को अपने काम के लिए जरूरी उपकरण और प्रशिक्षण मिल रहा हैं । इससे उन्हे अपनी कला को बचाए रखने में बड़ी मदद मिल रहीं हैं । वन डिस्टिक वन

प्रोडक्ट के तहत आजमगढ़ जनपद के निजामाबाद की ब्लैक पॉटरी पूरी दुनिया में मशहूर है. यहां की काली मिट्टी से बने उत्पादों की मांग देश ही नहीं विदेशों में भी रहती है. ऐसे में शिवरतन प्रजापति इस काली मिट्टी से छोटे-छोटे कलात्मक सजावटी और फैंसी सामान बनाकर, यहां की काली मिट्टी को एक नई पहचान देना चाहते हैं. शिवरतन का कहना है कि इसका मुख्य मकसद यह है कि यहां के युवाओं को भी इसके तहत और अधिक हुनरमंद बनाया जा सके, जिससे पूरी दुनिया में नाम रौशन कर सकें।

ब्लैक पॉटरी बनाने की तकनीक

निजामाबाद के ब्लैक पॉटरी के बर्तनों की सबसे बड़ी खासियत ये है कि सजावट के लिए इनमें प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। ये बात भी दिलचस्प है कि इन बर्तनों को बनाने के लिए महीनों की मेहनत लगती है। अमूमन अप्रैल–मई के महीने में तालाबों के सूखने पर मिट्टी निकाल के इकट्ठा कर ली जाती है और बाद में इसे अच्छे से साफ कर के पानी में गूंथा जाता है। फिर चाक पर उन्हें सांचों की मदद से अलग अलग आकार में ढाल लिया जाता है। पकाने के बाद इन पर सरसों का तेल और सब्जियों का चूर्ण इस्तेमाल करते हैं ताकि इनकी चमक बढ़ जाए। इन बर्तनों को नेचुरल काला रंग देने के लिए इन्हें खास तौर से चावल की भूसी वाली भट्टी में पकाया जाता है। इस कला की विशेष पहचान इसकी काले रंग की चमकदार मिट्टी है, जो एक विशेष तकनीकी प्रक्रिया — धुएँ (carbon firing) द्वारा प्राप्त की जाती है। भट्टी में वस्तुओं को पूर्ण रूप से धुएँ में बंद करने से यह विशिष्ट रंग उत्पन्न होता है। इसके बाद इन वस्तुओं पर चाँदी जैसी धातु से इनले डिज़ाइन की जाती है, जिससे यह और अधिक आकर्षक हो जाती हैं।

निजामाबाद की ब्लैक पॉटरी

वैसे तो निजामाबाद के 12–15 गांवों में ब्लैक पॉटरी की कला फैली हुई है पर निजामाबाद के हुसैनाबाद को इस कला का केंद्र माना जाता है। यहां के कुम्हारों समेत 300 से 400 परिवार ब्लैक पॉटरी के कारोबार और निर्माण से जुड़े हुए हैं। इसमें कुम्हारों समेत टेरीकोटा और सजावट के कारीगर भी शामिल हैं। इन

परिवारों के हजारों सदस्य के लिए ब्लैक पॉटरी की कला आय का मुख्य स्रोत बन चुकी है। इस कला की इतनी मांग है कि आजमगढ़ के राजस्व में ये कला सालाना 2 से 3 करोड़ रूपये का योगदान देती है। यहां बने हुए बर्तनों का 80% हिस्सा विदेशों में एक्सपोर्ट किया जाता है।

प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री कला को दे रहे बढ़ावा

भले ही ये कला मुगल काल से चली आ रही है मगर आज तक इस कला को बड़ा बाजार नहीं मिल सका। पीएम नरेंद्र मोदी ने इस कला को पहचाना और इसे बढ़ावा भी दिया। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पीएम मोदी ने इन बर्तनों को विदेशी राजनेताओं को गिफ्ट किया। इसके अलावा भी सरकार इन बर्तनों के लिए बाजार बनाने के लिए लगी हुई है। ब्लैक पॉटरी को भी ज्योग्राफिकल इंडेक्स की लिस्ट में जगह दी गई और खरीदारों के लिए मार्केटिंग की जाने लगी है। निज़ामाबाद की ब्लैक पॉटरी सैकड़ों परिवारों की जीविका का माध्यम है। अधिकांश कारीगर पारंपरिक रूप से इस कार्य से जुड़े हुए हैं और यह कला रोज़गार के रूप में पूरी एक पीढ़ी को जोड़ती है। यह कुटीर उद्योग ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक रीढ़ है।

इसके अलावा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक जनपद-एक उत्पाद योजना में आजमगढ़ से ब्लैक पॉटरी को चुना ताकि उसे बढ़ावा दिया जा सके। मेलों में भी ब्लैक पॉटरी को प्रदर्शित किया जा रहा है वहीं निजामाबाद के लोगों ने भी बर्तनों को बेचने के लिए बढ़िया दुकानें खोल ली हैं। इन बर्तनों को ऑनलाइन बिकने के लिए भी उपलब्ध करा दिया गया है, इन प्रयासों से अब निजामाबाद की आय भी बढ़ने लगी है। ब्लैक पॉटरी केवल एक कला नहीं, बल्कि निज़ामाबाद के सामाजिक ढांचे की आत्मा है। इसका निर्माण मुख्यतः कुम्हार समुदाय द्वारा किया जाता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी इसे सीखते और सिखाते आए हैं। यह प्रक्रिया परिवार आधारित होती है, जहाँ पुरुष आमतौर पर चाक चलाते हैं, महिलाएँ सजावट व पॉलिश का काम करती हैं और बच्चे छोटे-मोटे कार्यों में सहायता करते हैं।

माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी हस्तशिल्प कलाकार को सम्मानित करते हुए

(दिल्ली में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से हस्तशिल्प कला के विषय में बात करते कलाकार)

निज़ामाबाद की पारंपरिक हस्तशिल्प कला केवल मिट्टी से बनी वस्तुएँ नहीं हैं, बल्कि यह संस्कृति, आत्मनिर्भरता और कारीगरी का जीवंत उदाहरण हैं। इन्हें संरक्षित रखना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है, ताकि यह कला आने वाली पीढ़ियों तक जीवंत रह सके। यदि सरकारी प्रयासों, सामाजिक जागरूकता और तकनीकी सहायता को एक साथ लाया जाए, तो यह क्षेत्र न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हस्तशिल्प की राजधानी बन सकता है।

भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है, जहाँ शिल्प और कला का इतिहास सभ्यता जितना ही पुराना है। देश की कुटीर और लोककलाएँ न केवल उसकी पहचान हैं, बल्कि सामाजिक संरचना, पारंपरिक ज्ञान, और आर्थिक जीवन की भी रीढ़ हैं। उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ ज़िले की निज़ामाबाद तहसील में विकसित ब्लैक पॉटरी (काली मिट्टी की शिल्पकला) एक ऐसी ही विरासत कला है, जो न केवल अपने सौंदर्य और तकनीकी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसके पीछे छिपी इतिहासबोध, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक समरसता भी इसे विशेष बनाती है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

निज़ामाबाद की ब्लैक पॉटरी का इतिहास सैकड़ों वर्षों पुराना है और यह कुम्हार समुदाय की पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती आ रही जीवित परंपरा का प्रमाण है। यह कला न केवल स्थानीय कारीगरों की आजीविका का आधार है, बल्कि क्षेत्रीय सांस्कृतिक विरासत की पहचान भी बन चुकी है। मिट्टी, आग, धुएँ और शिल्प कौशल का अनूठा संयोजन इस कला को न केवल सौंदर्य की दृष्टि से, बल्कि तकनीकी रूप से भी विशिष्ट बनाता है। ब्लैक पॉटरी केवल एक हस्तशिल्प नहीं, बल्कि निज़ामाबाद क्षेत्र की सामाजिक संरचना और जीवनशैली का भी अभिन्न अंग है। इसका निर्माण मुख्यतः कुम्हार समुदाय द्वारा किया जाता है, जो इसे पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते आ रहे हैं।

इस कला का सामाजिक प्रभाव इस प्रकार देखा जा सकता है:

रोज़गार का साधन:

यह शिल्प सैकड़ों परिवारों के लिए आय का मुख्य स्रोत है। पूरा परिवार – महिलाएँ, पुरुष और बच्चे – मिलकर कार्य करते हैं। निज़ामाबाद की सैकड़ों कुटीर इकाइयों में यह कला *रोज़गार का प्रमुख स्रोत है। जहाँ अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर ही निर्भरता होती है, वहाँ यह शिल्प गैर-कृषि आधारित वैकल्पिक आजीविका उपलब्ध कराता है।

सामूहिकता और सहयोग:

ब्लैक पॉटरी का निर्माण सामूहिकता पर आधारित होता है – कोई मिट्टी तैयार करता है, कोई चाक चलाता है, कोई डिज़ाइन बनाता है, और कोई पॉलिश करता है। यह सामूहिक श्रम भारतीय ग्रामीण समाज की पहचान है। सामाजिक दृष्टिकोण से यह हस्तकला क्षेत्रीय समाज की आर्थिक रीढ़, सामुदायिक एकता, और परंपरा के निरंतर हस्तांतरण का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह कला कुम्हार समुदाय की पहचान है, किंतु इसमें महिलाओं और युवाओं की भागीदारी भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह शिल्प जहाँ एक ओर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर भारत की सांस्कृतिक कूटनीति में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

महिलाओं की भागीदारी:

महिलाएँ आमतौर पर डिज़ाइनिंग, फिनिशिंग और सजावट जैसे कार्यों में योगदान देती हैं, जिससे यह कला महिला सशक्तिकरण का भी माध्यम बनती है। इस कला में महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे वस्तुओं की सफाई, डिज़ाइन उकेरना, रंगाई-पुताई, सुखाना और फिनिशिंग जैसे कार्यों में निपुण होती हैं। इससे महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सहभागिता का अवसर मिलता है।

परंपरा एवं पर्यावरण का संरक्षण:

यह कला सामाजिक आयोजनों, पूजन कार्यों, त्योहारों (जैसे दीपावली, छठ आदि) और विवाह समारोहों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ब्लैक पॉटरी से बनी वस्तुएँ धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण होती हैं। विशेष रूप से दीपावली, छठ पूजा, नवविवाह, आदि में इनका प्रयोग होता है। मूर्तियाँ, दीये, कलश, थालियाँ और पूजन सामग्री इस कला के माध्यम से तैयार की जाती हैं। ब्लैक पॉटरी से बनी वस्तुएं पर्यावरण के संक्षरण में भी महती भूमिका हैं । इससे किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं हैं बल्कि पर्यावरण की हितैषी एवं संरक्षक हैं ।

वर्तमान समय में यह हस्तशिल्प परंपरा और आधुनिकता का संगम बन चुका है – एक ओर इसकी गहरी ऐतिहासिक जड़ें हैं, तो दूसरी ओर यह नए डिज़ाइन, ऑनलाइन बिक्री और अंतरराष्ट्रीय मांग के कारण आर्थिक रूप से भी फल-फूल रहा है। निज़ामाबाद की ब्लैक पॉटरी स्थानीयता में वैश्विकता (Global in Local) का सर्वोत्तम उदाहरण है। यह शिल्प हमें यह सिखाता है कि कोई भी परंपरा तब तक जीवित रहती है

जब तक वह समाज के भीतर प्रासंगिक बनी रहे और उसे आवश्यक संरक्षण व सम्मान प्राप्त होता रहे। इसलिए, आज की आवश्यकता यह है कि हम ब्लैक पॉटरी को केवल एक "हस्तशिल्प उत्पाद" के रूप में न देखें, बल्कि उसे भारत की सांस्कृतिक पहचान, ग्रामीण आत्मनिर्भरता और सामाजिक सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में मान्यता प्रदान करे।

निष्कर्ष

निज़ामाबाद की ब्लैक पॉटरी एक ऐसी कला है जो इतिहास, संस्कृति, समाज और आजीविका का सम्मिलित रूप है। यह केवल मिट्टी की वस्तुएँ नहीं, बल्कि परंपरा, मेहनत, रचनात्मकता और आत्म-सम्मान की गाथा है। यदि इस कला को समुचित संरक्षण, प्रशिक्षण, डिज़ाइन नवाचार और वैश्विक बाज़ार उपलब्ध कराए जाएँ, तो यह न केवल कारीगरों के जीवन को समृद्ध कर सकती है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंच पर गौरव प्रदान कर सकती है। भारतीय संस्कृति की पहचान उसकी विविध लोक कलाओं, हस्तशिल्प परंपराओं और शिल्पगुणों में बसती है। भारत में हस्तशिल्प केवल सजावटी माध्यम नहीं हैं, बल्कि यह लोक जीवन, सामाजिक संरचना और पारंपरिक ज्ञान का सजीव प्रतिबिंब हैं। ऐसी ही एक विशिष्ट कला है ब्लैक पॉटरी — एक अद्वितीय मिट्टी की शिल्पकला, जो उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित निज़ामाबाद तहसील (जिला: आज़मगढ़) की धरोहर है। यह कला अपने विशेष काले रंग, चमक, नक्काशी और पारंपरिक तकनीकों के लिए विश्वविख्यात है। ब्लैक पॉटरी केवल एक मिट्टी की शिल्पकला नहीं है, बल्कि यह इतिहास, समाज, परंपरा और आत्मनिर्भरता का जीवंत संगम है। निज़ामाबाद की यह विरासत कला भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण है, जिसे समय की धूल से बचाना और आगे बढ़ाना हम सभी की साझा ज़िम्मेदारी है। यदि उचित संरक्षण, डिज़ाइन नवाचार, बाज़ारिकरण और नीति सहयोग मिलता रहे, तो यह कला वैश्विक स्तर पर *भारतीय हस्तशिल्प का प्रतीक चिन्ह बन सकती है।

भारतवर्ष की सांस्कृतिक आत्मा उसकी लोक परंपराओं और हस्तकला में बसती है। देश की हर तहसील, हर गाँव, हर ज़िले में कोई न कोई ऐसी विशिष्ट कला बसती है जो केवल सौंदर्यशास्त्र का प्रतीक नहीं, बल्कि आजीविका, पहचान और सामाजिक आत्मसम्मान का भी स्तंभ है। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र के आज़मगढ़ जिले की निज़ामाबाद तहसील में पाई जाने वाली ब्लैक पॉटरी इसी तरह की एक *सजीव और बहुआयामी विरासत है। ब्लैक पॉटरी का ऐतिहासिक महत्त्व इसकी सदियों पुरानी उत्पत्ति, पारंपरिक तकनीकों, और मुग़ल काल में इसकी स्वीकृति व प्रसार में निहित है। यह कला केवल मिट्टी से बनी वस्तुओं का निर्माण नहीं है, बल्कि यह मानव श्रम, अनुभव, पीढ़ियों का ज्ञान, और सांस्कृतिक मूल्यों का सुंदर संगम है। भट्ठी में पकाई गई यह मिट्टी, जिस पर धातु की इनले डिज़ाइन उकेरी जाती है, अपने काले रंग और चमक के साथ न केवल वस्तु को सजाती है, बल्कि भारतीय कारीगर के आत्मबल और कलात्मक आत्मा को भी दर्शाती है। निज़ामाबाद की हस्तशिल्प कला, विशेष रूप से ब्लैक पॉटरी, केवल एक शिल्प नहीं बल्कि ग्राम्य संस्कृति, परंपरा, सामूहिकता और आत्मनिर्भरता का जीवंत प्रतीक है। इसकी ऐतिहासिक गहराई, सामाजिक समरसता

और कलात्मक विशिष्टता इसे एक राष्ट्रीय धरोहर बनाती है। यदि इस कला को उचित संरक्षण, डिज़ाइन नवाचार, प्रशिक्षण, और वैश्विक बाज़ार से जोड़ा जाए, तो यह न केवल ग्रामीण जीवन को आर्थिक बल दे सकती है, बल्कि भारत को विश्व हस्तशिल्प मंच पर और अधिक सशक्त पहचान भी दिला सकती है।

संदर्भ :

Perriman, Jen. (2000). *Traditional Pottery of India*. Landon: A. & C. Black. pp. 66–73

Saraswati, Baidyanath. (1978). *Pottery-Making Cultures and Indian Civilization*. New Delhi: Abhinav Publications.

Ahuja, Ram. (2019a). *Bhartiya Samaj* [Indian Society]. Jaipur: Rawat Publications. ISBN 978-81-7033-639-X.

Ahuja, Ram. (2019b). *Bhartiya Samajik Vyavastha* [Indian Social System]. Jaipur: Rawat Publications. ISBN 978-81-7033-268-X.

Rawat, Harikrishna. (2018). *Samajik Shodh Vidhiyaan* [Social Research Methods]. Jaipur: Rawat Publications. ISBN 978-81-316-0567-X.

Dubey, Shyamcharan. (2010). *Bhartiya Gram* [Indian Village]. Delhi: Vani Prakashan. ISBN 81-7055-465-9.

राय, गोविन्दचंद्र. (1997). *प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन*. वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन. पृ. 14, 16, 36

ब्रह्म स्वरूप. (2017). *निज़ामाबाद के मृण्मय पात्र: एक अध्ययन*. वाराणसी.

पाण्डेय, राजकुमार. (2020). *निज़ामाबाद की काली मृद्भांड परंपरा का कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन*. वाराणसी.

सिन्हा, कुमार अशोक. *बिहार के हस्तशिल्प*. पटना: निदेशक, उपेंद्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. (2011). *भारतीय हस्तकला की परंपराएं: भूत, वर्तमान और भविष्य*. नई दिल्ली.

समाज कल्याण विभाग, ग्रामीण विकास. *हस्तशिल्प*. (सरकारी वेबसाइट से प्राप्त).

विकास आयुक्त कार्यालय, हस्तशिल्प. *हस्तशिल्प*. (सरकारी वेबसाइट से प्राप्त).

उत्तर प्रदेश सरकार. (2018, 24 जनवरी). *एक जनपद, एक उत्पाद*. (सरकारी वेबसाइट से प्राप्त).

पटेल, सु॰ कु॰ (2009). *बदलते दौर में हस्तकला*. *कुरुक्षेत्र*, नई दिल्ली: ग्रामीण विकास मंत्रालय.

सर्वमंगला. (2012). भारत में कुटीर और हस्तशिल्प उद्योग: ग्रामीणों के लिए चुनौतियाँ और अवसर, *पेरिपेक्स*, 1(9), 9–10.

योजना. (2019, अप्रैल). *योजना*. नई दिल्ली: निर्माण भवन, ग्रामीण विकास मंत्रालय.

कुरुक्षेत्र पत्रिका. (2009, जुलाई). *कुरुक्षेत्र पत्रिका*. नई दिल्ली: निर्माण भवन, ग्रामीण विकास मंत्रालय.

कला व शिल्प. (2013). *कला व शिल्प*. रायपुर: राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण, छत्तीसगढ़.

गाँधी, हेमा. (2009). "हस्तशिल्प से रोजगार," *कुरुक्षेत्र पत्रिका*, नई दिल्ली: ग्रामीण विकास मंत्रालय.

मेनन, हेमंत. (2023). *स्थानीय परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण शिल्प*. नई दिल्ली: सूचना भवन.

दीनदयाल हस्तकला संकुल (व्यापार केंद्र एवं शिल्प संग्रहालय). (2017, 22 सितंबर). वाराणसी.

सरकार, आर. (2017). *मिट्टी के बर्तन उद्योग में प्रौद्योगिकी का समावेश और प्रभाव: भारत के पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग जिले के माटीगारा ब्लॉक में एक अध्ययन*.